सालमपंजा की खेती

खेती पश्चात् प्रबन्धनः

- पुराने कंदों को युवा कन्दों से अलग किया जाता है और एक घंटे तक इसको गर्म पानी में भिगोया जाता है।
- कन्दों की बाहरी त्वचा को हटाया जाता है और हल्की पीली कन्दों को धूप में सुखाकर इसे भंडारित किया जाता है।

पैदावारः

- प्राकृतिक अवस्था में लगभग 1.764 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।
- हरित घरों में प्रत्यारोपण करके इसकी उत्पादकता लगभग 1.80– 2.0 टन प्रतिहेक्टयर तक बढ़ाई जा सकती है।

सामान्य नाम	:	सालमपंजा
वानस्पतिक नाम	:	डेक्टाइलोराइजा हेटीजेरिया
कुल	:	ओरकिडियेसी
उपयोगी भाग	:	जंड़ और प्रकन्द
सामान्य उपयोग	:	इसका उपयोग भोजन, चैतन्य करने वाली औषधि और अतिसार, राजवंश, रक्तातिसार, चिरकालिक ज्वर और श्वेत प्रदर नामक स्त्रियों के रोगों के लिए किया जाता है। यह विशेषकर महिलाओं के लिए प्रसव के बाद बहुत अच्छी जड़ी–बूटी होती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास आईएचबीटी, पालमपुर हिमाचल प्रदेश के द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

सालमपंजा

डेक्टाइलोराइजा हेटीजेरिया
कुलः ओरकिडियेसी

- सालमपंजा टेरिसटियल चिकने चमड़े जैसा 20–25 सेमी. लम्बा पौधा होता है।
- इसके कन्द हल्के फैले हुए, हथेलियों के आकार के 3–5 अंगुलियों में विभाजित हुई रचना के समान होते है।
- पत्तियाँ 4–6 स्तंभिक, रैखिक भाले की धार के आकार वाली होती है।

जलवायु एवं मिट्टी

- एल्पाइन क्षेत्रों में तथा पश्चिमी हिमालय की अत्याधिक ठण्डी जलवायु (2500–3000 मीटर) में भी पौधा असानी से उगाया जा सकता है।
- पौधों के विकास के लिए नम, एसिडिक रेतीली, समृद्ध दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है।
- आंशिक रुप से धूप वाले स्थान इसकी खेती के लिए अधिक बेहतर होते है।
- 15 –25°C के बीच का तामपान इसके विकास के लिए सर्वोत्तम होता हैं।

रोपण सामग्रीः

- बीज और कंदों की कटिंग।
- प्रकंदों के अंकुरण छिटका कर भी पौधों को उगाया जाता है।

नर्सरी तकनीक

पौध उगानाः

- वर्धी रोपण कन्द के द्वारा अधिक सफल होता है (4–6 सेंटीमीटर ऊंचा पौधा तैयार होता है)।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- बीज को कम ऊँचाई पर प्राकृतिक उत्पति स्थान से एकत्रित करते हुए अधिक बेहतर परिणाम प्राप्त किये जाते हैं।
- अपरिपक्व और ताजे बीजों को इकट्ठा करके अंकुरण प्रतिशतता को बढ़ाया जाता है।
- एक हेक्टेयर के लिए लगभग 1,11,150 कंदों या कंदों के खंड़ों की आवश्यकता पड़ती है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- भूमि पर हल चलाते हुए उसको समतल किया जाना चाहिए और निराई मुक्त रखना चाहिए।
- एक हेक्टयर के लिए लगभग 5000 किलोग्राम पशु खाद की आवश्यकता होती है। पशु खाद और जंगली घासपात की खाद से इसके जीवन, विकास और पैदावार में वृद्धि होती है।

पौधा रोपण और अनुकूलतम दूरीः

- 4.0 मिमी आकार के छोटे कंद को 15 सेमी. x 15 सेमी. की दूरी पर 5.0 सेंटीमीटर–7.0 सेटीमीटर गहराई में प्रत्यारोपित किया जाता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- इस पौधे को अतीस तथा चिरायता के साथ उगाया जा सकता है।

अंतर खेती और रख–रखाव पद्धतियाँः

निराईः

- विशेष रूप से वर्षा ऋतु में प्रत्येक सात से दस दिनों के भीतर निराई इसके अधिकतम विकास के लिए उपयुक्त होती है।

सिंचाईः

- जड़ों के विकास के लिए 80–90 प्रतिशत नमी की आवश्यकता होती है।
- आरम्भिक चरण के दौरान निचले भागों में प्रत्येक बारह घंटों में सिंचाई की जरूरत होती है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई

- प्रायः कन्दों को पाँच वर्षों के पश्चात् काटने से अच्छी पैदावार होती है।
- कभी कभी इसे प्रत्यारोपण के दो या तीन वर्षों के बाद भी काटा जा सकता है।
- सितम्बर के अंत में बीज के पकने पर कंदों को एकत्रित किया जाता है।